

## सूक्ष्मजीव मलेरिया से भी बचाते हैं!

वैसे तो यह बात चूहों पर किए गए प्रयोगों से पता चली है मगर संभवतः यह मनुष्यों पर लागू होती है। मलेरिया का संक्रमण एक मच्छर द्वारा काटे जाने के साथ शुरू होता, यदि वह मच्छर खून पीते-पीते आपके शरीर में *प्लाज़्मोडियम* नामक परजीवी को प्रविष्ट करा दे। मगर *प्लाज़्मोडियम* परजीवी का शरीर में पहुंचना हमेशा बीमारी पैदा नहीं करता। दरअसल, लाखों संक्रमित व्यक्तियों में से बहुत थोड़े-से लोगों को मलेरिया पूरे शवाब पर होता है। संक्रमण और बीमारी के बीच कई चरण होते हैं और लुइसविले विश्वविद्यालय के शरीर-प्रतिरक्षा वैज्ञानिक नाथन श्मिट ने अब एक नया कारक जोड़ दिया है जिसका सम्बंध आपकी आंतों में बसे सूक्ष्मजीव संसार से हो सकता है।

सबसे पहले तो श्मिट ने कुछ ऐसे चूहों पर प्रयोग किए जो जेनेटिक दृष्टि से लगभग एक जैसे थे मगर अलग-अलग विक्रेताओं से प्राप्त किए गए थे। इनमें मलेरिया परजीवी की प्रतिक्रिया में अंतर देखे गए। पता चला कि इन चूहों का सूक्ष्मजीव संसार अलग-अलग था।

शोधकर्ताओं ने बात को तफसील से समझने के लिए कुछ प्रयोग किए। उन्होंने चूहों को दो समूह में बांटा - मलेरिया के प्रति संवेदी और प्रतिरोधी। फिर कुछ ऐसे चूहे

तैयार किए जिनकी आंतों में सूक्ष्मजीव संसार बसा नहीं था। इनमें से कुछ को संवेदी चूहों का और कुछ को प्रतिरोधी चूहों की आंतों में पाए जाने वाले सूक्ष्मजीव दिए गए। देखा गया कि जिन चूहों को प्रतिरोधी चूहों के सूक्ष्मजीव मिले थे, वे मलेरिया परजीवी के प्रवेश के बाद भी रोग के गंभीर लक्षणों से बच निकले।

सूक्ष्मजीवों सम्बंधी इस अध्ययन का विवरण *प्रोसीडिंग्स ऑफ़ दी नेशनल एकेडमी ऑफ़ साइन्सेज़* में प्रकाशित हुआ है। शोधकर्ताओं का ख्याल है कि आंतों में पलने वाले सूक्ष्मजीव शायद शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को किसी तरह से 'ताकत' प्रदान करते हैं।

क्या इस तरीके का उपयोग मनुष्यों में संभव है? शोधकर्ताओं को लगता है कि निकट भविष्य में तो इसके आसार नहीं हैं। चूहों को सिर्फ दही खिलाने से बात नहीं बनी हालांकि दही सूक्ष्मजीवों का एक अच्छा स्रोत है। मगर यदि हमें यह पता चल जाए कि ठीक-ठीक कौन-से सूक्ष्मजीव मलेरिया-रोधी हैं, तो शायद बात बन सकती है। वह हो या न हो, मगर यह बात लगातार रेखांकित हो रही है कि हमारी आंतों में पलने वाले सूक्ष्मजीवों का हमारे साथ रिश्ता काफी उलझा हुआ है। (*स्रोत फीचर्स*)